सर जोशुआ रेनॉल्ड्स तथा रॉयल एकेडमी

सर जोशुआ रेनॉल्ड्स Sir Joshua Reynolds अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड के सर्वा धक प्रभावशाली चत्रकारों में से एक थे। उनका जन्म 16 जुलाई 1723 को Plympton, Devonshire में हुआ था। वे न केवल एक उत्कृष्ट Portrait कलाकार थे, बल्कि वे एक सैद्धांतिक वचारक, शक्षक और Royal Academy of Arts के प्रथम अध्यक्ष भी बने। अंग्रेज़ी चत्रकला में उन्होंने "Grand Style" या "Grand Manner" की प्रतिष्ठा की, जिसमें कला को नैतिक, ऐतिहा सक और आदर्शवादी मूल्यों से जोड़ा गया।

प्रारं भक जीवन

रेनॉल्ड्स एक श क्षत परिवार से आते थे, उनके पता एक वद्यालय प्रधानाचार्य थे। प्रारं भक शक्षा के बाद उन्होंने 1740 में चत्रकार Thomas Hudson के अधीन प्र शक्षण लया। कला की गहराई को समझने के लए उन्होंने 1749 से 1752 तक इटली की यात्रा की, जहाँ उन्होंने Renaissance और Baroque कला का गहन अध्ययन कया। Michelangelo, Raphael और Titian के कार्यों से उन्हें अत्य धक प्रेरणा मली और यह प्रभाव उनके चत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

शैलीगत वशेषताएँ

उनकी की शैली आदर्शवाद और क्ला सक सौंदर्यशास्त्र से प्रेरित थी। उन्होंने Portraiture को केवल व्यक्ति की बाहरी समानता तक सी मत नहीं रखा, बल्कि उसमें चरित्र, गरिमा और नैतिकता का समावेश कया। उन्होंने अपने चत्रों में Grand Manner की अवधारणा को लागू कया, जिसमें चत्र के वषय को शास्त्रीय मुद्रा, आदर्शीकृत चेहरा और भव्य वस्त्रों के माध्यम से उच्च स्थान प्रदान कया जाता था।

रेनॉल्ड्स ने चत्रण में प्रकाश और छाया के प्रयोग, रंगों की गरिमा, और गहराई की संरचना पर वशेष ध्यान दिया। वे अक्सर पेंटिंग के लए पुराने मास्टरों की तकनीकों का प्रयोग करते थे और उनके माध्यम से एक नई अंग्रेज़ी शैली का निर्माण कया।

प्र सद्ध कृतियाँ

उन्होंने मुख्यतः Portraits व्यक्ति चत्रों का सृजन कया, जिनमें उन्होंने अंग्रेज़ी समाज के बुद् धजी वयों, कुलीनों, महिलाओं और बच्चों के चत्र बनाए। उनके चत्र न केवल शारीरिक सुंदरता को दर्शाते हैं, बल्कि एक नैतिक ष्टि तथा बौद् धकता से ओतप्रोत भी होते हैं।

उनकी प्र सद्ध कृति *"Lady Sarah Bunbury Sacrificing to the Graces"* में एक युवती को एक प्राचीन यूनानी देवी के मंदिर में ब ल चढ़ाते हुए दिखाया गया है। यह चत्र केवल धा र्मक भावना नहीं, बल्कि नैतिक सौंदर्य और स्त्री गरिमा का प्रतीक भी है।

"The Age of Innocence" Reynolds की सबसे प्रय कृतियों में से एक मानी जाती है, जिसमें एक मासूम बा लका की निष्कलुष मुस्कान और सरलता को दर्शाया गया है। यह चत्र अब ब्रिटिश संस्कृति में मासू मयत का प्रतीक बन चुका है।

उन्होंने Samuel Johnson, Edmund Burke और David Garrick जैसे समकालीन वचारकों और कलाकारों के Portraits बनाए, जो आज ऐतिहा सक और कलात्मक महत्व रखते हैं।

रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स और रेनॉल्ड्स का योगदान
1768 में Royal Academy of Arts की स्थापना ब्रिटेन में कला को संर क्षत करने, सखाने और प्रद र्शत करने के लए की गई थी। Sir Joshua Reynolds इसके प्रथम अध्यक्ष नियुक्त हुए और उन्होंने 23 वर्षों तक इस पद को गरिमा के साथ निभाया।

उन्होंने "Discourses on Art" नामक भाषणों की एक श्रृंखला दी, जिसमें कला के उद्देश्य, नैतिक जिम्मेदारी और अध्ययन की पद्धति पर प्रकाश डाला गया। इन भाषणों में उन्होंने युवा कलाकारों को अनुशासन, अध्ययन और आदर्शों की ओर प्रेरित कया। उनका यह मानना था क "कला में सच्चा नवाचार तभी संभव है जब वह परंपरा से संवाद करे।"

Royal Academy के ज़रिए उन्होंने युवा कलाकारों को अध्ययन की सु वधाएँ प्रदान कीं, प्रदर्शनी की परंपरा शुरू की और कला को एक पेशेवर अनुशासन के रूप में स्था पत कया।

सर जोशुआ रेनॉल्ड्स का निधन 23 फ़रवरी 1792 को हुआ। उनके सम्मान में लंदन में St. Paul's Cathedral में उनका अंतिम संस्कार कया गया, जहाँ उन्हें अन्य राष्ट्रीय वभूतियों के साथ दफनाया गया। उनके मत्र और समकालीन लेखक Samuel Johnson ने उन्हें "मानव गरिमा का चत्रकार" कहा था।उनकी शक्षाएँ, चत्र और कला- ष्टि ने अंग्रेज़ी चत्रकला को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई। वे एक वचारक, शक्षक और संस्थापक भी थे, उन्होंने इंग्लिश व्यक्ति चत्रण कला को एक नई दिशा दी। उनके द्वारा स्था पत Royal Academy आज भी ब्रिटिश कला की रीढ़ बनी हुई है। Reynolds की कला और ष्टिकोण, आज भी कला की गरिमा और सामाजिक उद्देश्य के बीच एक संतु लत संवाद प्रस्तुत करते हैं।